International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 4 | July - August 2025 ISSN: 3048-9490

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय समाचार पत्रों के योगदान का अध्ययन

विकास द्विवेदी [1], डॉ. दिवाकर अवस्थी [2]

[1] शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

[2] सहायक आचार्य, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

सारांश

बदलते परिदृश्य के साथ के साथ जब आज प्रिंट मीडिया से निकलकर पहले प्रसारण पत्रिकारिता और अब डिजिटल पत्रकारिता के युग में प्रवेश कर चुके हैँ, और आज प्रिंट पत्रकारिता धीरे धीरे घटती पाठक संख्या से जूझ रही है, तो लोग प्रिंट पत्रकारिता के महत्व को कम आंकने लगे हैँ तो ऐसे में इतिहास के उस पन्ने में झाँकना जरुरी हो जाता है जहाँ से प्रिंट ने संघर्ष से शुरुआत की और देश को गुलामी की जंजीरों से आजाद होने तक अपना अप्रतिम योगदान दिया। प्रिंट के उन ओजस्वी पत्रकारों ने संकट के समय में भी अपना धैर्य नहीं खोया और कोड़े खाकर जेल जाने जैसी तमाम यातनाओं को सहकर भी अपना कर्तव्य बखूबी निभाया और अख़बार के पन्नों पर लगातार ब्रिटिश हुकूमत की ज्यादतियों के खिलाफ राष्ट्रवाद के आयाम से सींचते रहे। ऐसे में आइये हम नजर डालते हैँ भारतीय प्रिंट पत्रकारिता की उस संघर्ष भरी यात्रा पर जहाँ राजा राम मोहन राय का संवाद कौमुदी था, गोपाल कृष्ण गोखले का 'हितवाद' था, तिलक का 'केसरी' था तो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी का नवजीवन और यंग इंडिया भी था। हमारे देश भारत ने अपनी आजादी के लिये लम्बे वक्त तक संघर्ष किया है। देश को स्वाधीन कराने के लिये अनेक कर्मयोगियों ने अपने अपने तरीके से प्रयास किये हैं, किसी ने शांति का रास्ता चुना, तो किसी ने क्रांति का, किसी ने वकालत का रास्ता चुना तो किसी ने पत्रकारिता का। आजादी के इस योगदान में वो पत्रकारिता ही थी, जिसने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ खबरें छाप-छाप कर उनकी नींद हराम कर दी थी। वो भारतीय पत्रकार ही थे जिन्होंने अंग्रेजो को इस बात का बखूबी अहसास करा दिया था की अब देश जाग चुका है और वो अब तुम्हारे जुल्म को और नहीं सहेगा।

मुख्य शब्द: स्वतंत्रता आंदोलन, भारतीय पत्रकारिता, राष्ट्रवाद, प्रेस प्रतिबंध, हिंदी पत्रकारिता

प्रस्तावना

अखबारों और उनके संपादको सहित उनसे जुड़े तमाम पत्रकारों ने कलम और कागज़ की ताकत के सही प्रयोग से देश की जनता में जनजागरण की ऐसी मसाल जलाई कि नित नये जन्मते क्रांतिकारीयों के फलस्वरूप अंग्रेज जल्द समझ गये की उन्हें ये देश जल्द छोड़कर जाना होगा और ऐसा हुआ भी। इसके उदाहरण के रूप में शहीद क्रांतिकारी भगत सिंह को हुई फांसी के बाद जब दूसरे दिन खबर अखबारों की सुर्खियाँ बनी तो पूरा देश मानों धधक उठा। लोगों के मन में भगत सिंह के प्रति जन्मी सहानुभूति ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ एक जनमत तैयार किया और उसी दिन ये तय हो गया की अंग्रेजों को यहाँ से जल्द जाना होगा और कुछ वर्ष बाद ऐसा हुआ भी। आजादी के आंदोलन को पत्रकारिता ने धार देने का काम किया और इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आजादी के इस महायज्ञ में आहुति के लिए भारत के पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सभी जगह से खूब आवाजें उठी| देश के पत्रकारों ने मानों ये तय कर लिया था कि वह किसी भी कीमत पर आजादी का झंडा लहराकर रहेंगे| ब्रिटिश हुकूमत के भारतीयों पर किये गये प्रत्येक अन्याय के प्रति पत्रकारों ने अपनी-अपनी भाषाई पत्रकारिता में आवाज बुलंद कर रखी थी| इस दौरान विभिन्न प्रेस कानूनों के माध्यम से पत्रकारिता की आवाज दबाने का भी कुत्सित प्रयास हुआ किन्तु हर बार जीत भारतीय पत्रकारों की हुई, और ये सिलसिला तब तक नहीं थमा जब तक कि देश से अंग्रेजों को बाहर नहीं कर दिया गया|

उद्देश्य

- देश के स्वतंत्रता आंदोलन में समाचार पत्रों के योगदान का अध्ययन।

शोध पद्धति

इस शोधपत्र में हम भारत पर ब्रिटिश हुकूमत के दौरान शुरू हुए समाचार पत्रों का अध्ययन करेंगे। जहां हमें भारतीय पत्रकारिता के इतिहास से जुडी जानकारी प्राप्त करने जरूरत होगी। अतः यहाँ हम भारतीय पत्रकारिता के इतिहास पर आधारित " विवेचनात्मक शोध पद्धति" का उपयोग करेंगे। यहाँ पर द्वितीयक स्रोतों से जैसे, अखबारों, पत्रिकाओं, किताबों और इंटरनेट से प्राप्त जानकारी को शोधपत्र में शामिल किया गया है।

परतंत्र भारत में पत्रकारिता की शुरुआत और चुनौतियाँ

लगभग 700 वर्षों की गुलाम, तुगलक, सैयद, लोदी, मुग़ल इत्यादि वंशो की परतंत्रता के बाद ब्रिटिश गुलामी के रूप में भारत में एक और दासता के युग का सूत्रपात हो रहा था क्योंकि देश मुगलों की आधीनता से निकलकर, अब अंग्रेजो के अधीन हो चुका था। मुग़ल सल्तनत भी अनेकों भागों में विभक्त हो चली थी और देश के पूर्वी छोर बंगाल से ब्रिटिश हुकूमत अपने पैर पसार रही थी, और ये तभी तय हो गया था जब प्लासी के 1757 में हुए युद्ध में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और ब्रिटिश सेनापति राबर्ट क्लाइव के मध्य हुए युद्ध में सिराजुद्दौला की हार हुई और इसके बाद 1764 के बक्सर युद्ध में मीरजाफर की संयुक्त सेनाओं को क्लाइव ने फिर हराया और इसके बाद बंगाल से शुरू हुये ब्रिटिश शासन ने साल 1772 में वारेन हेस्टिंगन्स के रूप में बंगाल का अपना पहला गर्वनर जरनल चुना और यहीं से भारत की गुलामी की एक और नयी दास्तान शुरू हुई। ये भी संयोग ही था की इधर भारत में ब्रिटिश हुकमत का राज स्थापित होता है और उधर सिर्फ 8 साल बाद देश में पत्रकारिता की शुरुआत। बड़ी बात ये थी की यह कार्य भी एक भारतीय द्वारा न शुरू होकर, अंग्रेज द्वारा ही शुरू किया गया था। हालांकि उससे पहले भी साल 1766 में एक अंग्रेज विलियम वोल्टास ने अख़बार निकालने की घोषणा की थी लेकिन ये घोषणा सिर्फ घोषणा ही रही।

29 जनवरी साल 1780 में जेम्स आगस्टक हिक्की द्वारा " बंगाल गजट" नाम से पहले भारतीय अख़बार की शुरुआत की गयी। यह दो पेज का अखबार 12 इंच लम्बा और 8 इंच चौड़ा था। इस अखबार के मुख्य पृष्ठ पर ऊपर जहाँ हिक्कीस बंगाल गजट लिखा रहता था तो वहीं थोड़ा नीचे कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर लिखा रहता था, मतलब एक ही अखबार के दो नाम थे। आगस्टक हिक्की के नारे "मस्तिष्क और आत्मा की स्वतंत्रता" के नाम पर 3 कालम में अंग्रेजी में छपने वाला यह अखबार ईस्ट इंडिया कम्पनी में व्याप्त भ्रष्टाचार पर तो खूब लिख ही रहा था, साथ ही यह कम्पनी अधिकारियों के निजी जीवन पर भी खूब लिख रहा था। हिक्की ने अपनी आलोचना में वारेन् हेस्टिंगन्स को तो खूब परेशान किया ही इसके साथ ही उसने श्रीमती वारेन हेस्टिंगन्स को भी नहीं बक्शा। वारेन हेस्टिंगन्स ने हिक्की के आपत्तिजनक लेखन से हुए अपमान का बदला लेने के लिये पत्र के खिलाफ कार्यवाही करते हुए उस पर 80 हजार रूपये का भारी भरकम जुर्माना लगाया। हिक्की द्वारा जुर्माना न जमा करने पर जून 1781 में जेल में डाल दिया गया, तथा पोस्ट ऑफिस द्वारा पत्र भेजने पर भी रोक लगा दी गयी। हालांकि जेल में रहते हुए भी उसने सरकार की कटु आलोचना जारी रखी। जनवरी 1782 में उसे पुनः दो वर्ष का कारावास और ₹2000 जुर्माने की सजा सुनाई गई। इसके बाद सरकार ने उसके टाइप को जप्त कर लिया और सम्भवतः 5 जुलाई 1982 को प्रकाशित अपने अंतिम अंक के साथ यह पत्र हमेशा के लिये बंद हो गया लेकिन हिक्की ने जो मसाल जलाई उसका असर यह हुआ कि भारत की पत्रकारिता जगत में धीरे-धीरे क्रांति आ गयी, जो देश को आजादी के रास्ते पर ले गयी।

हिक्की के अखबार के बाद तमाम उत्साही समाचार पत्रों और उनके संपादको का उदय हुआ। इस अखबार के छपने के कुछ महीने बाद एक व्यावसायिक समाचार पत्र के रूप में कलकत्ता से नवंबर 1780 में पीटर रीढ़ तथा बी मैसिक द्वारा अंग्रेजी में इंडिया गजट का प्रकाशन हुआ। इसमें कंपनी के ही समाचार छापे जाते थे इसीलिए इस पत्र को सरकारी

विज्ञापन भी सुलभ थे। इसके बाद शासकीय संरक्षण में फ्रांसिस ग्लैडिन ने साल 1784 में कोलकाता से साप्ताहिक कोलकाता गजट का प्रकाशन आरंभ किया। इसमें सरकारी विज्ञापन तथा अधिसूचनाएं प्रकाशित होती थी। इसके बाद सन गार्डन तथा हे ने 6 अप्रैल 1785 को कोलकाता में मासिक पत्रिका के रूप में ओरिएंटल मैगजीन का प्रकाशन किया। इसी वर्ष फरवरी 1785 में थॉमस जॉन ने साप्ताहिक बंगाल जर्नल की स्थापना की। इसी वर्ष अक्टूबर 1785 में ही मद्रास का सबसे पहला पत्र रिचर्ड जॉन स्टोन के संपादन में मद्रास कुरियर नाम से प्रकाशित हुआ। यह भी शासकीय पत्र था, जिसे मुक्त डाक सेवा उपलब्ध थी, इसके अलावा इसी वर्ष विलियम जॉन्स के संपादन में एशियाटिक मिसलेनी का भी प्रकाशन हुआ। देश में अंग्रेजी समाचार पत्रों के प्रकाशन का क्रम लगातार जारी था और 1786 में कोलकाता क्रॉनिकल नामक साप्ताहिक का प्रकाशन ए उपजान के मार्गदर्शन में कलकत्ता में हुआ और साल 1789 में मुंबई में बॉम्बे हेराल्ड का प्रकाशन शुरू हुआ यह भी एक साप्ताहिक पत्र था। इस तरह से हम देखते हम देखते हैं कि ब्रिटिश हुकूमत के प्रारंभिक भारत में अंग्रेजी में ही सही लेकिन पत्रकारिता की शुरुआत हो गई थी लेकिन अब भारतीय पत्रकारों की बारी थी, जिससे देश में पत्रकारिता के नए आयाम स्थापित करते हुए राष्ट्रवाद की अलख जगाई जा सके, और इस दायित्व को भारतीय पत्रकारों ने बखूबी निभाया भी।

आजादी का संघर्ष और भारतीय पत्रकारिता

देश में बढ़ते अंग्रेजी पत्रकारिता के प्रभुत्व के बीच भारतीय यह समझ गए थे कि बिना अपनी राज्य स्तरीय भाषाओं का प्रचार प्रसार किये और उन्ही भाषाओं में समाचार पत्रों को प्रकाशित किए बगैर अपने लोगों तक संदेश पहुंचाना मुश्किल है। वैसे तो किसी भारतीय भाषा में प्रकाशित पहला अखबार दिग्दर्शन था, जो की 1818 में जान क्लार्क मार्शमैन ने स्थापित किया था किन्तु भविष्य में भारतीयों के लिये समाचार पत्रों के महत्व को भाँपते हुए राजाराम मोहन राय ने 4 दिसंबर 1821 से बांग्ला साप्ताहिक संवाद कौमुदी का प्रकाशन किया जिसके संपादक थे ताराचंद्र दत्त और भवानी चरण बनर्जी। इस साप्ताहिक पत्र के माध्यम से राजा राममोहन राय ने बंगाल में सती प्रथा जैसी तमाम कुरीतियों को खत्म करने का प्रयास किया। सामाजिक बदलावों को और व्यापकता प्रदान करने के लिए राजा राममोहन राय ने 12 अप्रैल सन 1822 को 'मिरातुल अखबार' नाम से फारसी पत्र आरंभ किया और इसे व्यापकता प्रदान की। उनके द्वारा सामाजिक जागरूकता का या क्रम लगातार जारी रहा और उन्होंने 10 मई सन 1829 को नील रतन हालदार के संपादक तत्व में बांग्ला, फारसी और हिंदी में बंगदूत पत्र का प्रकाशन किया। इसी बीच 30 मई सन 1826 को पत्रकारिता जगत में जुगल किशोर शुक्ल के संपादकत्व में हिंदी के पहले समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन शुरू हुआ, दुर्भाग्य से महज डेढ़ साल के अंदर ही इसे 15 दिसंबर 1827 के आखिरी अंक के साथ बंद कर दिया गया। 20 अंगुल लम्बा और 13 अंगुल चौड़ा यह पत्र निश्चय ही सभी दृष्टियों से संपादित व्यवस्थित पत्र था जिसने कम समय में ही हिंदी पत्रकारिता के भावी विकास के लिए उर्वर भूमि पैदा कर दी। उदंत मार्तंड के बारे में चर्चा करते हुए अंबिका प्रसाद वाजपेई लिखते हैं जहां तक उड़ान मार्तंड की भाषा का प्रश्न एवं उसे समय लिखी जाने वाली किसी भाषा से हीन नहीं है, हम यह निःसंकोच कह सकते हैं कि उदंत मार्तंड 'हिंदी का पहला समाचार पत्र' होने पर भी भाषा और विचारों की दृष्टि से सुसंपादित पत्र था। जँहा तक हिंदी पत्रकारिता की बात है, उसे दो चरणों में विभक्त करना ही ठीक होगा...

(i) जागरण काल (1885-1919 ई.)

(ii)क्रांति काल (1929-1947 ई.)

क्रांतिकारी पत्रकारिता के फल स्वरुप भारतीयों में अपरंपार शक्ति फलीभूत हुई, और कालांतर में हम स्वतंत्र भी हुए। उन विकट परिस्थितियों में जब 'गुरुदेव' रविंद्र नाथ टैगोर जैसे विचारकों को ये चिंता थी कि अंग्रेजों के हाथों लुट चुका

हमारा भारत कैसा होगा उसका भविष्य क्या होगा, तब हमारे युगदृष्टा पत्रकारों ने उन्हें आश्वास्त किया था कि अपने राष्ट्र में अपार जनशक्ति है हमारे साधन अनंत है। जनता के प्रतिनिधि, जनता के लिए, जनता के शासन की बागडोर अपने हाथ में लेंगे और देश को तरक्की के उच्च मुकाम तक ले जाएंगे। उन्होंने घोषणा कि...

नवीन कंठ दो कि मैं नवीन गान गा सकूं।

स्वतंत्र देश की नवीन आरती सजा सकूं।।

अंग्रेज हमेशा भारत की पत्रकारिता को कुचलने के लिए अपनी चालें चला करते थे। यहां तक की मुनरो जैसे उदार कहे जाने वाले प्रशासक भी भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता के पक्ष में नहीं थे, फिर भी चार्ल्स मेटकाफ ने 1936 में नया प्रेस कानून पारित करके भारतीय प्रेस को पूर्व ऑर्डिनेंस से स्वतंत्र कर दिया। इस तरह प्रेस से प्रतिबंध हटा लेने के बाद भारत में समाचार पत्रों का आधिकाधिक विकास हुआ, किंतु यह भी बहुत अधिक लंबे समय तक चल नहीं सका जब 1857 की क्रांति हुई तो एक बार फिर से पत्रकारिता की स्वतंत्रता को कुचलने की कोशिश की गई। लॉर्ड कैनिंग ने नए अधिनियम पारित करते हुए भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता को कुचलना की पूरी कोशिश की और किसी भी सामग्री के सरकार विरोधी होने पर तुरंत प्रेस की जप्ती के आदेश दिए गए। इसके बाद भी भारतीय प्रेस ने झुकना नहीं सीखा और वह लगातार अंग्रेजों की दमन नीतियों के खिलाफ आवाज बुलंद करते रहे। सन 1862 में गिरीश चंद्र बोस के बंगाली और इसके बाद आए बाल गंगाधर तिलक के मराठा और केसरी, गोपाल कृष्ण गोखले के सुधारक, और दादा भाई नौरोजी के हिंदुस्तानी अखबार ने अपनी राष्ट्रवादी पत्रकारिता से अंग्रेजों की नाक में ऐसा दम कर दिया अंग्रेजों को जनता पर थोपे गये पता नहीं कितने ही फैसलों को वापस लेना पड़ा। इस दौरान लार्ड लिटन द्वारा पत्रकारिता पर कड़े प्रतिबंध लगाने के और भारतीय प्रेस को अपने अधीन लेने के लिये साल 1878 में वर्नाकुलर प्रेस एक्ट लागू किया गया। इससे सरकार को समाचार पत्रों पर नियंत्रण का अधिकार मिल गया। हालांकि लार्ड रिपन के आने के बाद भारी दबाव के बीच वर्ष 1880 में इसे हटा लिया गया।

ब्रिटिश हुकूमत की दोहरी और दोयम नीतियों के खिलाफ बंगाल से एक और आवाज उठी और वह आवाज थी वर्ष 1904 से बंगाली भाषा में छपने वाले दैनिक अखबार 'संध्या' की जिसके संपादक थे ब्रह्माबंधु उपाध्याय। समाचार पत्र 'संध्या' ने फिरंगियों की दोयम नीतियों का डटकर भंडाफोड़ किया। इस अखबार का उद्घोष था कि यदि संघर्ष करते हुए मृत्यु भी आ जाए तो वह भी अमृत्व होगा। अखबार के संपादक ब्रह्म बंधु उपाध्याय की लेखनी में ओज और तेजस्विता थी, उनका जमीन से जुड़ाव था और इस वजह से वह अंग्रेजों के खिलाफ खुलकर आवाज उठाते थे। हालांकि वह इसका परिणाम भी जानते थे, जो कि आगे हुआ भी। राजद्रोह के आरोप में संध्या के संपादक को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें मृत्यु पर्यंत यातनाएं दी गई किंतु फिर भी नहीं झुके और देश के लिये इन परिस्थितियों का डटकर सामना किया। जँहा भारत के पूर्व में स्थित बंगाल में राष्ट्रवाद की आंधी सुनामी में बदल रही थी, तो वहीं भारत के पश्चिमी हिस्से पर मौजूद लाहौर में भी पत्रकारिता के माध्यम से देश भक्ति की ज्वाला भड़कनी शुरू हो गई थी। 26 अगस्त 1904 को लाहौर से 'हिंदुस्तान' नामक साप्ताहिक अखबार का प्रकाशन शुरू हुआ। इसके संपादक थे बाबू दीनानाथ। राष्ट्रभक्ति और अंग्रेजी हुकूमत के खुले विरोध के कारण अखबार जनता में जल्द ही लोकप्रिय हो गया। हालात यह हो गए कि ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ खबर लिखे जाने पर संपादक बाबू दीनानाथ को एक मामले में फंसा दिया गया और उन्हें 10 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई इस वजह से अखबार कुछ दिन के लिए बंद भी हो गया, किंतु जब दोबारा यह शुरू हुआ तो अखबार साप्ताहिक से अब दैनिक हो चुका था।

देश के प्रति अखबार का समर्पण कैसा था यह अरविंद घोष कि उसे वक्तव्य से पता चलता है जिसे अखबार में स्थान दिया गया था। यह वक्तव्य था कि राष्ट्र के लिए स्वतंत्रता उसी तरह आवश्यक है जैसे शरीर के लिए आत्मा। अखबार

के महत्व का पता इसी से चलता है कि 'राजभर दत्त' जैसे प्रखर राष्ट्रवादी पत्रकार भी इसके संपादक और सहयोगी रह चुके थे। सप्रे संग्रहालय में मौजूद इस अखबार के साल 1942 के अंकों से यह ज्ञात होता है कि इस अखबार का आकार 50 ×35 सेंटीमीटर कल प्रस्तों की संख्या 6 और मूल्य 1 आना था| दक्षिण अफ्रीका से अपनी पत्रकारिता में भारतीयों की आवाज उठाने वाले राष्ट्रीयता के अग्रदूत गाँधी जी का भी साल 1915 को भारत में आगमन हो चुका था। गाँधी जी ने न केवल नील की खेती, नमक क़ानून हटाने, और रौलट के विरोध में सामाजिक लड़ाईया लड़ी बल्कि 'नवजीवन', 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से आम जन में भी भारत की आजादी के प्रति चेतना जगा दी, गाँधी जी लगातार अपने पत्रों के माध्यम से ऐसे मुद्दे उठाते रहे जिनसे देश की जनता का कल्याण हो।

आजादी से पूर्व की पत्रकारिता में एक और बड़े नाम के रूप में महामना मदन मोहन मालवीय और उनके समाचार पत्र 'अभ्युदय' को जाना जाता है। साल 1907 में अभ्युदय की स्थापना के साथ ही महामना ने राष्ट्रवाद की एक अलग ही अलख जगा दी थी। उन्होंने सन 1910 में मर्यादा नामक पत्रिका भी निकाली। इसके अलावा काशी के सनातन और लाहौर के विश्वबंधु अखबारों के प्रकाशन में भी उनका बहुत योगदान रहा। अपनी अच्छी खासी वकालत के बावजूद उन्होंने देश सेवा के लिए खुद को समर्पित कर दिया, और अपनी पत्रकारिता के माध्यम से अंग्रेज हुकूमत की बखिया उधेड़ दी। सन 1931 में लंदन में हुए गोलमेज सम्मेलन में उन्होंने गांधी जी के पक्ष का प्रबल समर्थन किया। उत्तर भारत में भी जँहा चद्रशेखर आजाद, और राम प्रसाद बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारियों की तूती बोल रही थी तो वहीं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे युगपुरुष वर्ष 1901 में सरस्वती पत्रिका शुरू कर हिंदी भाषा को सुदृढ़ करने सहित, देश वासियों में राष्ट्रीयता की भावना भर रहे थे। इसी क्रम में प्रताप नारायण मिश्र जी जैसे पत्रकार भी साल 1881 से ही ब्राह्मण पत्रिका के माध्यम से ब्रिटिश हुकूमत पर कुठाराघात कर रहे थे।

ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ राष्ट्रवाद और आजादी की ऐसी चिंगारी भड़की थी कि देश की सभी दिशाओं में फिरंगियों के खिलाफ आवाज उठ रही थी। देश के दक्षिणी हिस्से की तरफ से महाराष्ट्र में मराठी में समाचार पत्र 'भाल' की स्थापना साल 1905 में की गयी। इसकी स्थापना भास्कर बलवंत भोपटकर व दिनकर बलवंत भोपटकर बंधुओ द्वारा की गयी। इसमें समाचारों की जगह विचार और विश्लेषण को प्रधानता दी जाती थी। साम्राज्यवाद के खिलाफ लोगों को जागृत करने का कार्य इसने बड़े ही प्रभावी तरीके से किया था। उधर बाल गंगाधर तिलक के केसरी समाचार पत्र की तर्ज पर ही हरीपंत पंडित, गोपाल राव ओगले ने साल 1907 में जनता के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिये 'देशसेवक' का प्रकाशन शुरू किया। अपने नाम के अनुरूप इस अखबार ने देशसेवा काम भी खूब किया। उधर बंगाल में क्रांतिकारी विचारक, युगदृष्टा आचार्य श्री अरविन्द ने अविनाश चंद्र भट्टाचार्य एवं भूपेंद्र नाथ दत्त की मदद से साल 1906 में 'युगांतर' पत्रिका निकलना शुरू किया। भूपेंद्र नाथ दत्त साल 1907 में इसके संपादक भी बने। श्री अरविंद के छोटे भाई नरेंद्र कुमार घोष ने इस पत्र का संपादन भी किया। युगांतर की भाषा सीधे तौर पर क्रांतिकारियों के लिये बम और बारूद की भाषा थी। इसे पढ़ने के बाद सामान्य जन में भी देश के प्रति कुछ कर गुजरने की चाहत पैदा होती थी। एक अलग ही जुनून, उद्देश्य और जोश इस पत्रिका में देखने को मिलता था। यह पत्रिका अनुशीलन समिति का मुखपत्र थी और बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाती थी। वर्तमान में प्रकाशित हो रहे कुछ समाचार पत्र भी आजादी से पहले ही प्रकाशित होना शुरू हो गए थे। इनमें समाचार पत्र 'आज' का स्थान प्रमुख है।

5 सितंबर 1920 को शिवप्रसाद गुप्त द्वारा स्थापित बनारस से दैनिक 'आज' का प्रकाशन शुरू हुआ था। इसके पहले अंक में बाबूराव विष्णु पराडकर ने लिखा था कि हर बात में स्वतंत्र होना चाहते हैं हम। अपने देशवासियों का गौरव बढ़ाये, उनमें भारतीय होने का स्वाभिमान पैदा करें, उन्हें ऐसा बनाना भी क्यों न चाहिए जिससे उन्हें भारतीय होने का अभिमान हो और इसमें उन्हें तनिक भी संकोच ना हो। अपने पहले ही अंक में प्रकाशित समाचार पत्र 'आज' की यह

घोषणा पत्रकारिता की शुद्धता, राष्ट्रीयता, पारदर्शिता और आजादी के असल उद्देश्य को दर्शाती है, जिसे पढ़कर किसी में भी देश भावना का संचार हो सकता है। आजादी के आंदोलन के साथ ही दिन-ब-दिन राष्ट्रीयता से ओतप्रोत समाचार पत्रों की संख्या में बढ़ोतरी होती गई। न सिर्फ भारतीय भाषाओं बल्कि अंग्रेजी में भी भारतीय समाचार पत्रों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसमें 1919 से 1923 तक छपा मोतीलाल नेहरू का 'इंडिपेंडेंट' उन्हीं का 1922 में शुरू हिंदुस्तान टाइम्स ऑफ़ दिल्ली, 1927 में मुंबई महाराष्ट्र से शुरू हुआ एम जी देसाई का 'स्वार्क', लेस्टर हचसन का 'न्यूस्टार' ने खूब काम किया। उधर कोलकाता से लिबर्टी, एडवांस और फॉरवर्ड जैसे पत्रों का प्रकाशन भी 1930 में शुरू हुआ। साल 1931 में सरकार ने प्रेस एक्ट लाकर राष्ट्रवादी पत्रकारिता पर अंकुश लगाने का प्रयास किया था। हालांकि पत्रकारिता जगत में इसका जोरदार विरोध भी हुआ। 'आज' के पूरे पृष्ठ पर मोटे अक्षरों में संदेश छपा कि "समाचार पत्रों पर प्रहार, लेखन स्वतंत्रता का हरण करने वाला काला अध्याय है"। साल 1932-33 में चार हिंदी पत्रों को भारतीय दंड संहिता की धारा 124 के तहत दंडित भी किया गया था। भारतीय भाषाई समाचार पत्रों पर प्रेस सेंसरशिप का आतंक कितना ज्यादा था इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 12 नवंबर 1940 को समाचार पत्र 'समय' के संपादक ने लिखा है कि हमें न केवल टिप्पणियां और अगर लेख लिखना बंद करना पड़ा है बल्कि हमारे हिसाब में संगीनों के साए में हमारा झंडा भी जलाया गया है। हालांकि पत्रकारों में देश प्रेम का जुनून इतना था की तमाम सेंसर के बाद भी साल 1941 में एटा से नवीन भारत व उसी वर्ष आगरा से संदेश का प्रकाशन भी शुरू हुआ।

उपसंहार

वैसे तो विश्व भर में पत्रकारिता हमेशा से सच के साथ संघर्ष के लिये जानी जाती रही है किंतु भारतीय पत्रकारिता ने जिस तरीके से अपने कम संसाधनों, विषम परिस्थितियों, और देश की ब्रिटिश गुलामी के बाद भी लड़ाई नहीं छोड़ी तथा अपने देश को आजाद करके ही दम लिया। उसे पत्रकारिता के त्याग तपस्या और समर्पण की भावना को जाना जा सकता है। सीधे शब्दों में अगर हम कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी की आजादी का हर बड़ा नायक एक पत्रकार था, जोकि अपनी कलम की ताकत से फिरंगियों की संगीनों और तलवारों का जवाब दे रहा था। ऐसे ही नहीं अकबर इलाहाबादी ने कहा कि "जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो" उसके भी अपने कुछ मायने थे। आज भले ही पत्रकारों के वंशज वातानुकूलित कारों में घूमते हों लेकिन वह भी एक समय था जब पत्रकारों को अपने अखबार चलाने के लिए लाखों का घाटा सहना पड़ता था, लेकिन तब भी देश की आजादी का जज्बा कम नहीं था, वतन के लिए कुछ कर गुजरने का हौसला कम नहीं था। पत्रकारों को त्याग, तपस्या, संघर्ष और धैर्य के संबल पर जिंदा रहना होता था। फिर चाहे गांधी जी हों,श्री अरविंद जी हों,मालवीय जी हों,नेहरू जी हों, सभी ने पत्रकारिता का सहारा लेकर ही राष्ट्र को बचाया है और देश से अंग्रेजों को बाहर खदेड़ा है। इस प्रकार इतिहास में दर्ज पत्रकारिता के संघर्षो के आधार पर हम कह सकते हैं कि आजादी के संघर्ष टी भारतीय पत्रकारिता का विशिष्ट योगदान है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तिवारी डा. अर्जुन(1997), हिंदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या, -55
2. व्होरा आशारानी(2004), स्वाधीनता सेनानी लेखक पत्रकार, प्रतिभा प्रतिष्ठान, पृष्ठ संख्या 12-50
3. श्रीधर विजय दत्त (2008), भारतीय पत्रकारिता कोश, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या, 509-510
4. मांगलिक रोहित (2024), पत्रकारिता का इतिहास और समसामयिक परिपेक्ष्य, एजुगोरील्ला प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 47-56

5. गुप्ता डा. मोहनलाल (2017), भारत में प्रेस का विकास, शुभदा प्रकाशन, पृष्ठ संख्या, 10-60
6. सिन्हा राकेश (2009), राजनीतिक पत्रकारिता, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 33-48
7. जैसवाल डा. श्रीश चंद्र (2002), संयुक्त प्रान्त की हिंदी पत्रकारिता में भाषा चेतना का विकास, हिंदी बुक सेंटर, पृष्ठ संख्या 140-145
8. मिश्र कृष्ण बिहारी(2021), हिंदी पत्रकारिता आश्वास्ति और आशंका, प्रभात प्रकाशन।
9. कुमार डा. संदीप (2024), समाज और राजनीति में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका, शायरेन प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 17-26
10. मांगलिक रोहित(2024), हिंदी पत्रकारिता इतिहास एवं सिद्धांत, एजुगोरील्ला प्रकाशन
11. मिश्र कृष्ण बिहारी(2004) पत्रकारिता इतिहास और प्रश्न, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 87-89
12. वधवा प्रियंका (2014), पत्रकारिता का इतिहास, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 24-60
13. भानावत डा.संजीव, पत्रकारिता का इतिहास एवं जन-संचार माध्यम, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, जयपुर, पृष्ठ संख्या 27-100
14. पंत एन. सी, हिंदी पत्रकारिता का विकास, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 16-17
15. मुदगल राहुल(2011), संचार माध्यम और पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास, करन पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 98-102
16. गुप्ता आर. के.(2019), हिंदी पत्रकारिता: इतिहास एवं विकास, ओमेगा प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 208-2014
17. शर्मा नरेन्द्र कुमार (2011), स्वतंत्रता संग्राम और पत्रकारिता, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 146-154
18. रावत ज्ञानेंद्र, प्रेस: प्रहार और प्रतिरोध, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 55-56